

## विचार बिन्दु

रोग, सर्प, आग और शत्रु को तुच्छ समझ कर कभी उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। -सुभाषित

## स्वाइन फ्लू से बचाव के आयुर्वेदिक सूत्र

वर्तमान में दो प्रकार के एम्प्लुएन्जा-ए वायरस और दो प्रकार के एम्प्लुएन्जा-बी वायरस इंसाओं के मध्य बीमारी का कारण बन रहे हैं। एम्प्लुएन्जा-ए वायरस के 16 उप-प्रकार भी हैं। इनमें 14 प्रकार पक्षियों में तथा दो प्रकार चमगादड़ों के शरीर में पाये जाते हैं। एम्प्लुएन्जा-बी में छः उप-प्रकार ऐसे हैं जो मानव को संक्रमित करते हैं। स्वाइन फ्लू से बचाव के लिये वैक्सीनेशन महत्वपूर्ण उपाय माना जाता है, परन्तु वैक्सीन उत्पादन के तौर-तरीके लम्बे समय से नहीं बदले। वैक्सीन की प्रभाविता भी बड़े-बूढ़ों में असंतोषजनक है। वैक्सीनेशन न केवल हर वर्ष जरूरी है, बल्कि सभी वायरल संक्रमणों के विरुद्ध प्रभावी एकल वैक्सीन उपलब्ध नहीं है। एम्प्लुएन्जा के उपचार हेतु भी केवल एन्टी-विरासल ड्रग्स और पुराने ही कारगर मानी जाती हैं। पालीमेरिज मैकेनिज्म से सम्बंधित औषधियाँ अभी विकसित नहीं हो पाई हैं। एम्प्लुएन्जा के नये-नये रूपांतर या वैरिएंट से आपदा की आशंका सदैव बनी रहती है।

एम्प्लुएन्जा वायरस का संक्रमण छीकने, खाँसने, या संक्रमित सतहों व वस्तुओं को छूने से फैलता है। एक व्यक्ति कई बार संक्रमित हो सकता है। टाइप-ए एम्प्लुएन्जा वायरस असल में सुअर-जन्य वायरस का एक उप-प्रकार, ए (एच1 एन1) है। इसके कारण वर्ष 2009 में स्वाइन फ्लू महामारी फैली। अब यह मौसमी एम्प्लुएन्जा के रूप में संक्रमित करता है। सबसे पहले यह मेक्सिको के सीमांत क्षेत्र में पाया गया था, जो दो माह के भीतर 21 वीं सदी की पहली महामारी बन गया था। यह एक वृहद् विषय है। बीमार होने के बाद उपचार तो पृथक विषय है, परन्तु प्रश्न यह है कि क्या आयुर्वेद की मदद से स्वाइन फ्लू वायरस की चपेट में आने से बचा जा सकता है? आज की चर्चा इसी विषय पर केंद्रित है।

इस प्रश्न का उत्तर समझने के लिये यह जानना आवश्यक है कि कुछ लोग वायरस की चपेट में क्यों आ जाते हैं जबकि अन्य लोग बचे रहते हैं। आयुर्वेद की दृष्टि में इस प्रश्न का उत्तर बीज-भूमि का सिद्धांत और व्याधिक्रमत्व का सिद्धांत द्वारा स्पष्ट होता है। बीज-भूमि का सिद्धांत स्पष्ट करता है कि जब शरीर उपजाऊ होता है या कहिये कि सम्यक पाचन न होने के कारण जमा हुये आम जैसे विषाक्त पदार्थों के कारण, या पूर्व से ही अन्य रोगों से ग्रस्त रहने के कारण, प्रतिरक्षा तंत्र या व्याधिक्रमत्व कमजोर हो जाता है, तब बीज अर्थात् वायरस का संक्रमण होते ही आसानी से शरीर की कोशिकाओं में बढ़ने में सक्षम होते हैं।

इसके विपरीत जब भूमि बाँझ होती है, अर्थात् शरीर के आम-रहित होने से व्याधिक्रमत्व मजबूत रहता है, तो बीज अंकुरित नहीं होते या कहिये वायरल संक्रमण होने के बावजूद बीमारी शरीर में आगे नहीं बढ़ती। इसके साथ ही, यदि शरीर में जटराग्नि सम है तो भोजन के सम्यक पाचन से अंततः बनने वाला ओजस शरीर को संक्रमण से लड़ जाने और जीत जाने में मदद करता है। भौतिक स्तर पर ओजस की कमी का तात्पर्य प्रतिरक्षा-शक्ति या व्याधिक्रमत्व की कमी है। मानसिक स्तर पर ओजस की कमी का तात्पर्य मानसिक शक्ति की कमी और अल्पसत्त्व की स्थिति है। इस प्रकार यदि शरीर में रोग-प्रतिरक्षा-शक्ति या व्याधिक्रमत्व दुर्बल बनाये रखा जाये तो वायरल संक्रमण की स्थिति के बावजूद शरीर में स्वाइन फ्लू के कोई लक्षण या बीमारी उत्पन्न संभावना कम ही रहती है।

स्वाइन फ्लू से बचाव का पहला कदम यह है कि ओजस को दुर्बल अवस्था में रखकर शरीर की प्रतिरक्षा-शक्ति या व्याधिक्रमत्व बढ़ाकर तमाम तरह के वायरल फीवर, स्वाइन फ्लू, इन्फ्लुएन्जा जैसे सत्रिपातकारी संक्रमणों से बचा जा सकता है। यदि हमारी पाचन की आग सामान्य है-अर्थात् विषमग्नि नहीं है, माने न सुलग रही है (मन्दग्नि), न धक्करी नहीं है (तौक्ष्णग्नि)-तो हमारी प्रतिरक्षा और व्याधिक्रमत्व शक्तिशाली होगा और कोई संक्रमण हमारे ऊपर कब्जा नहीं कर सकता है। ऋतुओं के संघिकाल में विशेषकर वर्षाऋतु और शरदऋतु जैसे मौसमों के दौरान, जब मौसमी एम्प्लुएन्जा वायरल संक्रमण की संभावना अधिक होती है, तब पहले से ही सम्यक ऋतुचर्या के द्वारा आहार-विहार, सद्गत, स्वस्थवृत्त, रसायन की सुरक्षा-दीवार खड़ा करके रखना उपयोगी रहता है।

स्वाइन फ्लू से बचाव का दूसरा कदम यह है कि रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ने के साथ ही संक्रमण की संभावना को ही दूर किया जाये। इस सन्दर्भ में महर्षि सुश्रुत द्वारा औपसर्गिक रोगों के सन्दर्भ में संक्रामित-नकारण-सिद्धांत सभी वायरल इन्फेक्शन्स के लिये महत्वपूर्ण है: (प्रसङ्गाद्वात्संस्पृशिश्रवासात् सहभोजनात् सहाय्यासनाच्चापि वस्त्रमात्यानुलेपनात्)। कुष्ठं ज्वरश्च शोषश्च नेत्राभ्यन्दि एव च औपसर्गिकरोगाश्च संक्रामितं नारत्सम्। सु.नि.5.33-34। भावार्थ यह है यौन संपर्क,

शरीर से संपर्क, हाथ मिलाना, छोटी बूंदों से संक्रमण, पहले से संक्रमित व्यक्ति के साथ भोजन करना, संक्रमित व्यक्ति के साथ बैठना या सोना, संक्रमित व्यक्तियों के कपड़े, सौंदर्य प्रसाधन और गहनों का उपयोग आदि से संक्रमण की आशंका रहती है। ऐसे संक्रामक या औपसर्गिक रोग, जैसे वायरल-फीवर, सुअर-जन्य फ्लू, फुफ्फुसीय तपेदिक, कर्जकटिवाइरस आदि एक व्यक्ति से दूसरे से व्यक्ति संचारी होते हैं। अतः संक्रमण काल में आचार्य सुश्रुत की बात मानते हुये असात्येन्द्रियार्थ संयोग और प्रजापराध से दूर रहना चाहिये।

स्वाइन फ्लू से बचाव का तीसरा कदम यह है कि सम्यक दिनचर्या, रात्रिचर्या और ऋतुचर्या का पालन करते रहा जाये। भगदड़ के कारण स्वास्थ्य के लिये समय न देने का परिणाम अस्वस्थ रहकर खटिया में पड़े-पड़े भोगना पड़ता है। अतः नस्य, व्यायाम, पैदल चलना, अभ्यास, शरीर की सफाई, स्नान, साफ-सुथरे कपड़े पहनना, योग, प्राणायाम, रात में सात घंटे की नींद आदि आवश्यक हैं। संक्रमण काल, ऋतु-संघिकाल, वर्षा, शरद और वसंत ऋतु में अणुतेल का प्रतिमर्श नस्य लेना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिये सुबह-शाम साफ अँगुली में अणुतेल की कुछ बूंदें डालकर नासाग्रि में लगाया चाहिये। यह आरोग्य और दृढ़ता देती है। वायरस संक्रमण को भी रोकती है।

स्वाइन फ्लू से बचाव का चौथा कदम, आयुर्वेदाचार्यों की सलाह से, आहार, रसायन और औषधिक सम्यक प्रयोग पर है। आहार ऐसा हो जिससे जटराग्नि सदैव सम रहे एवं व्याधिक्रमत्व बढ़ा रहे। आधुनिक वैज्ञानिक सन्दर्भ में कहे तो ऐसा आहार जो ऑक्सिडेटिव स्ट्रेस लोड को कम से कम बढ़ाये, वही व्याधिक्रमत्व बढ़ा सकता है। रेसवेराट्रॉल एवं ऑक्सोरेसवेराट्रॉल युक्त खाद्य एवं पेय जैसे ट्राक्षासव, ग्रीन-टी, ट्राक्षा, अनार, संतरे व अननास आदि बचाव में बड़ी भूमिका निभाते हैं क्योंकि इनमें एंटीऑक्सिडेंट व एंटीवायरल गुण पाये जाते हैं। प्रिवेंटिव औषधियों में व्याधिक्रमत्व बढ़ाने हेतु रसायन और औषधियाँ उपयोगी हैं।

स्वाइन फ्लू और वायरल संक्रमण के परिप्रेक्ष्य में जिन औषधियों में आधुनिक वैज्ञानिक शोध हुई है, उनमें अश्वगंधा, शुण्ठी, कालामिर्च, पिपप्ली, गुडूची, पुदीना, हल्दी, यष्टिमधु, बिभीतकी, लहसुन, तुलसी, सहजन्, चित्रक, कालमेघ, वासा, सप्तचक्र (सेलेसिया रेटीकुलाटा), दूधी (राइटिया टिक्टोरिया) का क्षीर, आदि प्रमुख हैं। शहद की नई टहनियों में पाया जाने वाला आक्सोरेसवेराट्रॉल भी वायरस रेप्लीकेशन को रोकता है। अश्वगंधा, कालमेघ आदि की न्यूरामिनिडेज-इन्हिबिटर एक्टिविटी ठीक वैसी ही है जैसी कि आधुनिक औषधियों जानामिर्वि, ओसेल्टामिर्विक्व पेरांमिर्वि की है। आधुनिक औषधियों के प्रति रेजिस्टेंट वायरस स्ट्रेन विकसित होने की दशा में आयुर्वेद की औषधियाँ ही कल्याणकारी होंगी।

इलाहाबाद में आयुर्वेदपुरम के संस्थापक और विश्व-प्रसिद्ध क्षारसृज संजय डॉ. वी.बी. मिश्रा, जिन्हें पाइलस, फिस्टुला, सेंटिनेल टैंग (सेंटिनेल पाइलस), फिशस, पिलोनिडल सायनस, रेक्टल पॉलीप आदि से पीड़ित रोगियों में लगभग 25,000 सफल सर्जरी सहित आयुर्वेद चिकित्सा का ठोस अनुभव है, का कहना है कि लोग साधारण स्वास्थ्य समस्याओं के उपचार में भी प्रायः एंटीबायोटिक्स, दर्द निवारक, एन्टीपाइरेटिक, म्यूकोलाइटिक, खाँसी-निवारक तथा कन्जेसन निवारक दवाओं का अंधाधुंध उपयोग करने लगे हैं।

एंटीबायोटिक्स का दुरुपयोग तो और भी चिंताजनक है क्योंकि अध्ययनों और अनुभव से यह सिद्ध हो चुका है कि कॉमन-कोल्ड या सर्दी-खाँसी, फेरिन्जाइटिस, गले की खराश, खाँसी, एलर्जिक राइनाइटिस या साइनोसाइटिस आदि में एंटीबायोटिक्स का कोई खास लाभ नहीं है। इस दुरुपयोग के कारण रोगाणुओं में एंटीबायोटिक-रेसिस्टेंस विकसित हो रही है जो आने वाले समय में एंटीबायोटिक को निष्प्रभावी कर सकती है। डॉ. वी.बी. मिश्रा का मानना है कि ऐसी दशा में स्वाइन फ्लू सहित अनेक प्रकार के वायरल रोगों से बचे रहने के लिये संहिताओं, साईंस और अनुभव को साथ लेकर आधुनिक वैज्ञानिक विधियों से निर्मित कोल्डकैल, एलेरकैल, जेरलाइफ-एम व जेरलाइफ-डब्ल्यू जैसी डबल-स्टैंडर्डाइज्डमल्टीस्पेक्ट्रम आयुर्वेदिक रसायन व औषधियाँ बचाव और उपचार का अच्छा साधन रहेंगी।

स्वाइन फ्लू से बचाव का पाँचवाँ सुझाव यह है कि सद्गत और आचार रसायन का निरंतर पालनकिया जाये। विशेषकर स्नान, मलमार्गों व हाथ की सफाई, संक्रमित वस्तुओं, व्यक्तियों व स्थलों से सुरक्षित दूरी रखना, जम्हाई, छीक व खाँसी के समय मुँह ढकना, नासिका-द्वारों को कुरेदना से बचना, सोने, जागने, मंदिरपान, भोजन आदि में अतिवादी नहीं होना, स्नान के बाद पुनः पूर्व में पहने हुये कपड़े नहीं पहनना, हाथ, पैर व मुँह धोये बिना भोजन नहीं करना, गंदे या संक्रमित बर्तनों में भोजन नहीं करना, संक्रमित व्यक्तियों द्वारा लाया हुआ भोजन नहीं करना चाहिये।

अंततः एक बात स्पष्ट करना आवश्यक है कि बायोमैडिकल चिकित्सा की कथित श्रेष्ठता के युग में स्वाइन फ्लू से बचाव की एकमात्र विश्वसनीय विधि सालाना वैक्सीनेशन ही मानी जाती है। जहाँ तक आयुर्वेद का प्रश्न है, जैसा कि ऊपर वर्णित है, व्यक्तिगत स्तर पर आयुर्वेदाचार्यों की सलाह से आहार, विहार, रसायन, सद्गत, स्वस्थवृत्त एवं प्रोफाइलैक्टिक औषधियों द्वारा भी स्वाइन फ्लू से प्रायः बचाव संभव है। साथ ही, सामुदायिक और सार्वजनिक स्तर पर भी प्रयत्न आवश्यक होते हैं। ध्यान यह भी रखना है कि आयुर्वेद-सम्मत रणनीति केवल दवाई नहीं अपितु आयुर्वेद की समग्रता पर आश्रित है।

-अतिथि सम्पादक, डॉ. दीप नारायण पाण्डेय (इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी) (यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

# यंग वर्कफोर्स अर्थव्यवस्था के विकास में बड़ा परिवर्तन लाएगी : राव राजेंद्र

जैसलमेर, (निर्स)। आने वाले समय में राजस्थान की यंग वर्कफोर्स देश की आर्थिक उन्नति में भी योगदान देगी। शीर्ष ही भारत की औसत आयु 29 वर्ष होगी, वहीं राजस्थान, बिहार, मध्यप्रदेश एवं ओडिशा की औसत आयु 27 वर्ष होगी। आने वाले समय में यह यंग वर्कफोर्स देश की अर्थव्यवस्था के विकास में बड़ा परिवर्तन लाएगी। यह कहना था राजस्थान विधानसभा के डिप्टी स्पीकर राव राजेंद्र सिंह का।

वे आज इंडियन हेरिटेज होटल्स एसोसिएशन के 6वें एनुअल कन्वेंशन को सम्बोधित कर रहे थे। दो दिवसीय यह कन्वेंशन जैसलमेर के होटल सूर्यगढ़ में आयोजित किया जा रहा है। इस वर्ष के कन्वेंशन की थीम 'हार्नीसिंग हेरिटेज टू टूरिज्म एंड वॉलेंट' है। सिंह ने आगे कहा कि हेरिटेज टूरिज्म मात्र हेरिटेज प्रोपर्टीज में कमरों की बुकिंग करना ही नहीं है, बल्कि यह क्षेत्र की कला, संस्कृति को प्रदर्शित करने एवं बढ़ावा देना और रोजगार के अवसर उत्पन्न करने से सम्बंधित भी है। रोजगार के इन माध्यमों का उपयोग करते हुए देश की यंग वर्कफोर्स स्वयं को और बेहतर बना सकेगी तथा देश को आगामी स्तर तक ले जाएगी। उन्होंने कहा कि वर्ष 2030 तक भारत वर्ल्ड इकोनॉमी में 30 ट्रिलियन यूएस डॉलर का योगदान देगा।

राजस्थान सरकार के अतिरिक्त मुख्य सचिव पर्यटन एन सी गोयल ने कहा कि अब विभाग का फोकस सप्लाई से पूर्व डिमांड उत्पन्न करने, निर्णय लेने में टूरिज्म ट्रेड एवं उद्योग की भागीदारी बढ़ाने



जैसलमेर में इंडियन हेरिटेज होटल्स एसोसिएशन के 6वें एनुअल कन्वेंशन समारोह में राजस्थान की पर्यटन राज्य मंत्री कृष्णेंद्र कौर, राजस्थान विधानसभा के डिप्टी स्पीकर राव राजेंद्र सिंह, आईएचएचए के प्रेसीडेंट जोधपुर के पूर्व महाराजा गज सिंह, आईएचएचए के मानद महासचिव रणधीर विक्रम सिंह आदि मौजूद रहे।

उन्होंने आईएचएचए की तेजी से बढ़ती सदस्यों की संख्या तथा हेरिटेज को संरक्षित करने एवं बढ़ावा दिए जाने के लिए किए जा रहे उल्लेखनीय प्रयासों की प्रशंसा की।

राजस्थान सरकार के अतिरिक्त मुख्य सचिव पर्यटन एन सी गोयल ने कहा कि अब विभाग का फोकस सप्लाई से पूर्व डिमांड उत्पन्न करने, निर्णय लेने में टूरिज्म ट्रेड एवं उद्योग की भागीदारी बढ़ाने

पर किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त क्रिएटिव डिजाइनस, मीडिया बायिंग और जनसम्पर्क के लिये विशेषज्ञों को रखा जा रहा है। उन्होंने बताया कि राज्य में गत वर्ष पर्यटकों के आगमन में 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

आईएचएचए के प्रेसीडेंट जोधपुर के पूर्व महाराजा गज सिंह ने कहा कि गत अनेक वर्षों से एचएचए द्वारा केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय से हेरिटेज टूरिज्म पर

राष्ट्रीय नीति तैयार करने का आग्रह किया जा रहा है। उन्होंने पुनः दोहराते हुए कहा कि हेरिटेज की राष्ट्रीय नीति अत्यंत आवश्यक है और इसके बन जाने पर राज्यों द्वारा भी इसका अनुपालन किया जाएगा और हेरिटेज होटल मुवमेंट अत्यधिक प्रभावी एवं सक्रिय हो जाएगा। इससे पहले राजस्थान की पर्यटन राज्य मंत्री कृष्णेंद्र कौर ने अन्य अतिथियों साथ दीप प्रज्वलित कर कन्वेंशन का

■ वार्षिक कन्वेंशन में मुख्यमंत्री राजे भी आज शामिल होंगे

उद्घाटन किया। इसके अतिरिक्त मंत्री ने प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया। इस प्रदर्शनी में ऐसे प्रोडक्ट्स का प्रदर्शन किया गया है जिनका उपयोग हेरिटेज होटलों में होता है। केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय, राजस्थान पर्यटन और महाराष्ट्र पर्यटन द्वारा एक्जीबिशन परिया में अपने बूथ लगाये गये हैं। आईएचएचए के उपाध्यक्ष जोस डोमिनिक, पंजाब सरकार के पर्यटन एवं संस्कृति विभाग के प्रमुख सचिव जसपाल सिंह, संसद सदस्य सम्भाजीराजे छत्रपति और महाराष्ट्र पर्यटन के संयुक्त निदेशक आशुतोष राठौड़ ने भी अपने-अपने प्रदर्शन दिए। उद्घाटन सत्र का संचालन राकेश माथुर ने किया। आईएचएचए के मानद महासचिव, रणधीर विक्रम सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया। उल्लेखनीय है कि 3 सितम्बर को आईएचएचए के कन्वेंशन में मुख्यमंत्री, वसुंधरा राजे भी शामिल होंगे।

## 'पहले ही पांच लड़कियां, छठी बालिका जन्मी, आप ले जाएं'

भीलवाड़ा, (निर्स)। इस बार फिर पालना गृह में एक नवजात कन्या मिली है। परिजनों ने देर रात बाल कल्याण समिति के पदाधिकारियों को फोन कर बच्ची के लालन-पालन में असर्थता जताई।

बाल कल्याण समिति की अध्यक्ष सुमन त्रिवेदी ने बताया कि बीती रात

■ परिजनों ने पालने में जताई असमर्थता

करीब सवा एक बजे उनके मोबाइल पर कॉल आया, जिसमें कहा गया कि उनके पास पहले ही 5 बालिकाएँ हैं और छठी बालिका जन्मी है। इसे आप ले जाएँ इस पर त्रिवेदी ने उन्हें काफी समझाने का प्रयास किया, लेकिन वे नहीं माने और बाद में यह दंपती नवजात को महात्मा गांधी अस्पताल के पालना गृह में छोड़ कर चला गया। देर रात करीब 3 बजे सुमन त्रिवेदी अस्पताल पहुँची और नवजात कन्या को देख उसे इलाज के



भीलवाड़ा के महात्मा गांधी अस्पताल के पालना गृह में नवजात बच्ची को परिजन छोड़ कर चले गये।

लिए शिशु वार्ड में भर्ती कराया। डॉ. त्रिवेदी ने बताया कि 2014 में महात्मा गांधी चिकित्सालय में बनाये गये पालना गृह में अब तक सात बच्चों को छोड़ा गया है। इनमें से छह बच्चों की जान बचाई गई, जबकि एक मासूम को

हालत ज्यादा गम्भीर होने पर बचाया नहीं जा सका। झलझुलनी ग्यारस के ल्योहर के दिन मासूम को पालने में छोड़ने के कारण इस नवजात बच्ची का नाम राधाश्री रखा है और बच्ची की तबीयत अब खतरे से बाहर बताई जा रही है।

## ज़नवाणी

### विपक्ष मजबूत होना चाहिए

राहुल गांधी पर पत्थर फेंकना खोज की निशानी है। एक स्तम्भ पर टिकी भाजपा अति उत्साह में है, कभी मंदिर, गाय, हिंदुत्व आदि के दिखावे के बहाने कानून हाथ में लेने की वजह से विपक्ष मजबूत होगा। भारत में हिंदू का मतलब उच्च हिंदू ही है। भारतीय अर्थ व्यवस्था ने हिंदू को बांट रखा है, जो आज भी कायम है। आज भारत देश को जरूरत है सच्चे लोकतंत्र की, जिसमें सीधे राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, सांसद, विधायकों का चुनाव हो, जिसमें हर भारतीय का जुड़ाव सीधे राष्ट्रपति से भावनात्मक होगा।

-प्रमोद कुमार जैन, जयपुर (राज.)

## मेरी शाला

जिसने मुझको ज्ञान दिया, बचपन का दुलार दिया।

समरसता का पाठ पढ़ाकर,

जीवन का आभास दिया।

ऐसी प्यारी शाला को, देते हम सम्मान।

गलत कार्य कर कभी नहीं करेंगे

हम शाला का अपमान।

-के.जी.मालव, बालदडा-बारां (राज.)

## राशिफल



पंडित अनिल शर्मा

रविवार 3 सितम्बर, 2017

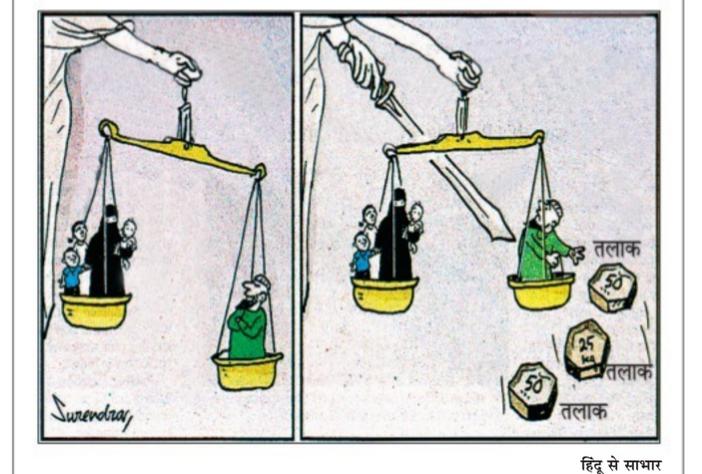
भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, द्वादशी तिथि, रविवार, विक्रम संवत् 2074, उत्तराषाढा नक्षत्र, शोभन योग, बालव करण, चन्द्रमा आज मकर राशि में प्रवेश करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-मकर, मंगल-सिंह, बुध-सिंह, गुरु-कन्या, शुक-कर्क, शनि-वृश्चिक, राहु-कर्क, केतु-मकर राशि में। आज उत्तराषाढा नक्षत्र प्रातः 9:37 तक, शोभन योग रात्रि 3:23 तक है। इसके पश्चात श्रवण नक्षत्र, अतिमंड योग, कोलव करण आरम्भ होगा। आज सार्वभौम सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 9:37 तक है। त्रिपुष्कर योग दिन 9:37 तक है।

आज प्रदोष व्रत, हरिवासरामा, श्रवण द्वादशी व्रत, पुनर्वसु री जयन्ती है। बुध उदय पूर्व में रात्रि 3:56 पर होगा।

श्रेष्ठ चौघड़ियाँ: चर 7:45 से 9:18 तक, लाभ-अमृत 9:18 से 12:26 तक, शुभ 2:00 से 3:34 तक। राहुकाल: 4:30 से 6:00 तक।

## कार्टूनी नज़रिया



हिंदू से साभार

मेष	सिंह	धनु
आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेगे। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।	घर-गृहस्थी के खर्चों पर नियंत्रण रखें। विवादित मामलों से रहित मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा।	आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बनने लगेगे। महत्वपूर्ण कार्यों में सार्थक सफलता मिलेगी। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।
वृष	कन्या	मकर
धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।	परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।	पिछले कुछ समय से चल रहा मानसिक तनाव दूर होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा।
मिथुन	तुला	कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।	घर-परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधित परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।	घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।
कर्क	वृश्चिक	मीन
घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। मनोरंजन कार्यक्रम बन सकते हैं। आपसी सहयोग/समन्वय से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।	घर-परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।	आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। संपादित स्रोत से धन प्राप्त होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।